कोई –कोई

श्रीमति कृष्णा
रूड़की

चढ़ते सूरज को सलाम करते हैं सभी,
पर छुपते को करता है कोई–कोई,

पत्थरों की पूजा करते हैं सभी,
पर इंसान को पूछता है कोई–कोई,

अमीरों को रोटी पूछते हैं सभी,
पर भूखे को खिलाता है कोई–कोई,

सुखों में आया करते हैं सभी,
पर दुःखों में निभाता है कोई–कोई,

अमीरों को झुक कर सलाम करते हैं सभी,
पर गरीबों से नजरें मिलाता है कोई–कोई,

चलने वालों के साथ कदम मिलाती है दुनिया,
पर गिरते को उठाता है कोई–कोई,

खुशियों में हंसती है दुनिया,
पर गम में हंस कर दिखाता है कोई–कोई,

जिंदगी तो जीते हैं सभी,
पर जिंदगी को समझ पाता है कोई–कोई,